Vol 2 Issue 10 April 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 10, April. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

कन्नड भाषा के भक्त कविः संत शिशुनाल शरीफ

एल.पी.लमाणी

हिन्दी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड, कर्नाटक

सारांशः

भारतीय भाषाओं में निर्मित साहित्य समस्त मानव जाती के लिए महान उपलब्धि है । दक्षिण भारत के द्राविडियन भाषाओं में कन्नड, तेलुगू, मलयालम, तामिल आदि साहित्य वर्तमान युगीन जीवन में चिंन की नई दिशा प्रधान करने में सक्षम है । मानवतावादी जीवन दृष्टिकोण से परिपूर्ण भारतीय साहित्य समग्र भारतीयों को ही नहीं बल्कि विश्व मानव को एक सूत्र में बांधने में सक्षम है ।

ऐसे ही भारतवर्ष साधु–संत, सिध्दि पुरुषों का देश है । यह भारतीय परंपरा है कि ऋषि–मुनि, साधु–संत, सिध्द–योगी, महात्मा यहॉ जीवनमुक्त होकर भी जीवित रहे है या अपनी पदछाप यहॉ छोड गये है । इस बात को ध्यान में रखते हुए कन्नड संत साहित्य में संत शिशुनाल सरीफ साहेब जी का संक्षिप्त परिचय किया जा रहा है ।

प्रस्तावना :–

कर्नाटक राज्य के धारवाड जिले के शिशुनाल नामक गॉव में मुसलमान दंपति पिता इसाम साहेब माता हुज्जुम्मा जी के कोख से सन तीन जुलै अठारह सौ अठराह के दिन शरीफ जी इस धरती पर अवतरीत हुए है । अपना सत्तर वर्ष के जीवन लिला में उन्होंने संसार को जताने और प्रबोधन के लिए जो कुछ किया वह भारतीय साहित्य, संस्कृति, धर्म और दर्शन की धरोहर बन गया है । शरीफ जी केवल कर्नाटक के ही नहीं समग्र भारत के और भारतीय संस्कृति के प्रतिक बने है ।

भारतीय परंपरा में अनेक संत मंहत अपने आचरणों को पुनित करके अपने, मौलिक तत्वों के द्वारा इस धरती को पवित्र बनाकर अमर हो गये हैं । ऐसे महान संतो में शिशुनाल शरीफ साहेब भी एक है । जिनको कर्नाटक का हर आदमी भली भांती जानता है ।

कर्नाटक के भक्ति–साहित्य की विशाल परंपरा में शरीफ सर्वाधिक लोकप्रिय संत कवि है । शरीफ जी में संदबोंचित गीत गाने की एक अद्भूत क्षमता थी ।

शरीफ जी के रचनाओं से हमें यह ज्ञात होता है कि उन्होंने जाती–वर्ण, पद सम्मान की सर्वधा उपेक्षा की और मानवात्मा के कल्याण पद की ओर ही अपनी दृश्टी डाली, शरीफ जी का जीवन दर्शन जिस तत्वों से निर्मित हुआ था उनमें इश्वर भक्ति की प्रधानता होने पर भी समाजोन्मुखता की अपेक्षा या अवहेलना नहीं है । विद्रोही, निर्भिक, समन्वयी, विनयी, परोपकारी, गुरु के प्रति अटल विश्वास तथा धर्म के व्यापक रुप को स्वीकार करने वाले थे । आचरणों की मर्यादा में उनकी दृढ आस्था थी । अनुभूत सत्य को ही सत्य मानता था । क्षमा, करुणा और अहिंसा उनकी दिनचर्या थी । इन्होंने ग्यारह सौ से अधिक कविताऍ लिखे है ।

डॉ. शिवानंद गुब्बण्णवर नामक एक आलोचक अपने ' बरदो पद बरको ' नामक शिशुपाल शरीफ साहेब में पद संग्रह में तत्वपदों को स्थूलरुप से सात भागों में विभाजित किया गया है । डॉ. मल्लिकार्जून सिंदगी के शोध प्रबन्ध का आवलोकन करने से पता चलता है कि वे शरीफ के तत्वनिष्ठ साहित्य को सात भागों में विभाजन करते है । वे निम्नलिखित है ।

1.अंतरंग के अनुभाव गीत
2.बेध प्रधान तत्वपद
3.दण्डक
4.रिवायत और सवाल जवाब
5.काल ज्ञान पद
6.मंगल गीत
7.गीत प्रधान नाटक (मैदानी खेल)

डॉ. मल्लिकार्जुन सिंदगी और डॉ. शिवानंद गुब्बण्णवरजी के शरीफ संबंधी तत्वपदों के विभाजन का अनुशीलन करने के बाद ऐसा लगता है कि दोनों आलोचकों के बीच ज्यादा परक नही है फिर भी डॉ. शिवानंदजी ने आने विभाजन में दर्शन को प्रमुख स्थान दिया है । शरीफ के तत्वपदों के बारे में सविस्तार विचार करने के बाद इस तरह विभाजन करना उचित लगता है ।

1.अंतरात्मा से आये हुए गीत
2.तत्वपद बोध प्रधान

Title : *कन्नड भाषा के भक्त कविः संत शिशुनाल शरीफ*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *एल.पी.लमाणी* **yr:2013 vol:2 iss:10**

3.काल ज्ञान पद
4.रिवायत और सवाल जवाब
5.दण्डक
6.मंगल गीत
8.गीत प्रधान नाटक ;मैदानी खेलद्ध
7.लावणी
8.होली पद

1)अंतरात्मा से आये हुए गीत :–

शरीफ जी के अनेक पदों में उनके व्यक्तिगत जीवन से संबंधित अनेक बात पायी जाती है । इस तरह के गीतों में शरीफ की अंतरात्मा ही पुकार उठती है ।

'' नत्रोळग ना तिळकोंडे
न्नग बेकाद गंडन्न माडिकोंडे
....
गुरुपदेशव पडकोंडे
ई भवके बारदंते माडिकोंडे
गुरुगोविन्दन पादव हिडकोंडे ''

शरीफ जी अने आपको जानकर अपनी पसंदवाले पति के साथ पारमार्थिक विवाह कर लेता है । यहॉ शरीफ जी अपने छेः बच्चो अर्थार्थ–काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर को भगाकर और तीन बच्चों अर्थार्थ–कनक, कामिनी, मिट्टी, से तंग आकर गुरु की सेवा करते हुए गुरुपदेश को पाते है। अंत में शरीफ जीगुरु के चरणकमल के सामने नतमसतक हो जाते है । यहॉ शरीफ जी आत्मा के सरुप को जानचुके है । वे समझाते है कि आत्मा और परमात्मा में कोई अंतर नहीं है। आत्मा की छाया परमात्मा पर और परमात्मा की छाया आत्मा पर पडते ही ज्ञानोदय हो जाता है । खुद को पत्नी और भगवान को पति के रुप में मानकर गीत गाते हैं ।

2.बोध प्रधान तत्वपद :–

शरीफ जी का कोई विशिष्ट पंथ नही था । सामान्य धर्मों के तत्वों को समान रुप से अध्ययन करने मानव कल्याण हो ही अपना प्रमुख उपदेश मानकर आगे बढ रहे थे । संसार की परमार्थिक शक्ति को एक ही स्थान एकत्रीत करने की कला को अच्छी तरह जाननेवाले शरीफ जी के काव्य में आद्यात्मिकता अपने आप आ गई है ।

'' गुडिय नौडिरणा देवर गुडिय नौडिरण्ण
गुडिय नौदिरिदु पोडविगे वेडयनु
अडगिकोंडु कडु बेडगिनोळिरुतिह ।''

इसका अर्थ है कि मनुष्य का शरीर एक मंदिर के समान है । सृष्टिकर्ता या परमपिता परमात्मा इस शरीर रुपी मंदिर में छिपकर बैठा है कि उसके उज्वल प्रकाश से सारा शरीर प्रकाशमय हो रहा है । और आगे बढकर कहते है कि भक्ति से ज्ञान, विरत्कि से मुक्ति मिलती हैं । इस तरह गीत गाते हुए भक्ति का मार्ग दिखलाते है ।

3.काल–ज्ञान पद :–

मुहमद शरीफ जी की वाणी में एक प्रकार की अतींद्रिय शक्ति काम करती थी । जो कह चुके है वह सबकुछ आज सच निकला है । उनकी भविश्यवाणी मे अगाध शक्ति थी । शरीफ जी महाज्ञानी और त्रिकाल ज्ञानी भी थे । भविष्य में आनेवाली विपत्तियों को अपने अपूर्व ज्ञान से पहले की जानकर सभी लोगों के सामने तत्वपदों के रुप में प्रकट करते थे । इन्ही तत्वपदों को ' काल–ज्ञान तत्वपद ' कहते है । शरीफ जी मरते समय यह कहे गये थे कि–दस बरस के बाद मेरी समाधी की महिमा देखिए । दस बरस तक उनकी समाधि की और किसीने ऑख उठाकर नहीं देखा था । आज अनेक भक्त समूह उनकी समाधि के दर्शन के लिए आया करते है । उसी संबंध में शरीफ जी इस तर गीत गाया है –

''सत्तु हत्तु वर्शद मेले
सत्य मेरेदित्तु महात्मरल्ले ।
होत्तु हिडी गोविन्द राजन पादव
पंचाक्षरिय ध्यानिसी नौडी ।''

इसका अर्थ यह है कि मेरी मृत्यू होने के दस वर्श बाद मेरी समाधी की महिमा देखिए और शुरु गोविन्द के पवाड को जान लेने की बात कहता है । साथ ही साथ पंचधारी मत्र को जप करने की सलाह देता है ।

4.रिवायत और सवाल–जवाब :–

जनपद कवि शिशुनाल शरीफ साहेब जी ने रिवायत से अपनी कविता की रचना करना प्रारंभ किया होगा । मोहरम, तौहार मनाते समय अद्भूत होनेवाले अनेक प्रकार के विकृत रुपो ने ही शरीफ जी को रिवायत पदों को गाने की प्रेरणा दी हैं ।

'' पापात्मनु ता पकीरनागी

रुप तणिसिकोंडू लोकदी
मनि मानिय तिरकोडु ।''

अर्थ– जो पापी फकीर की वेशभूषा पहनकर समाज के सम्मुख ढोंग करते हुए मारा–मार फिरकर भिख मंगनेवाले फकीर बनते है क्या ?इस तरह रिवायत के अनुसार ही सवाल जवाब के गीत गाया है ।

5.दण्डक :–

शरीफ जी हनुमान के गुणगान दंडक गीतों के रुप में गाएँ है ।
''हनुमंत भूप सदगूण मणि शांति रुप ।''

यहॉं हनुमान के दर्शन के लिए गये शरीफ जी मुसलमान होने के कारण मंदिर के बाहर खडे होकर प्रार्थना करनी पडी । हनुमान की सेवा, अपने स्वामी के प्रति उनकी अचल निष्ठा का चित्रण शरीफ जीं ने अपने दण्डक गीतों में किया है ।

6.मंगल गीत :–

सर्वधर्म समन्वकार शरीफ जी सर्वधर्म के आधिदेवताओं के प्रति मंगलगीत की रचना करके सभी की मंगल कामना करते है । उनके मंगल गीत में समदर्शी की भावना धर्म के विचार एवं योग साधना के लक्षण अधिक दिखाई पडते है ।

'' अंबागारुतियनु रंबेयरु बेलगिरे
शिंभ–निशुंभ संहारिगे शंकरिगे ।''

इसका अर्थ है कि माता अंबा भवानी की रंभाएँ तुम सब मिलकर आरती उतारी शंभु–निशुंभ का काम तमाम करनेवाली शंकरी पर मंगल गाओ । इस तरह देवी के मंगल गीत गाने समय देवी का चित्र गाने समय देवी का चित्र ही सामने उभरकर आता है देवी की महिमा का खूब वर्णन किया है । इस समय शरीफ जी ने शक्ति की उपासना भी करते थे ।

7.गीत प्रधान नाटक(मैदानी खेल) :

नाटक देखने में, नाटक करने में और नाअक की रचना करने में शरीफ जी सिध्द हस्त थे । शरीफ जी ने कुछ नाटको ं को सवयं लिखा था । इसके लिए हमें कुछ आधार भी मिलते है । शरीफ जी के स्वविरचित ' जैमिनी भारत ' इस प्रकार एक सौ उनचाच पृष्टों में '' मन्मथ बब्रुवाहन की लडाई '' नामक नाटकों की रचना की है । ' चन्द्रहास की कथा 'का रचना दो सौ पृष्टों में की है । शरीफ जी गॉव–गॉव में जाकर मैदानी खेल–खेल के लोगों को मार्गदर्शन भी किया है ।

8.लावणी :–

अनीति अधर्म से अधःपतन की और जानेवाले व्यक्तियों को सही रास्ते पर लाने के लिए
आजकल शरीफ जी के लावणी गीत अत्यंत प्रभावपूर्ण निकली है । लावणी गीतों की विशेशता
यह है कि– उसमें प्रास, अनुप्राय, लय ताल आदि को संदर्भ के अनुसार प्रयोग किया जाता है ।
'' चित्त सुचावनु बेडो
नित्यानंददलि नलिदाढो
सर्व ब्रह्ममय भपुर्रा वेदांत सारो ।''

यहॉं पर शरीं जी मानव को यह संदेश देते है कि इस सात्विक सुख (चित्तसुख) न अनुभव करते हुए उस शाश्वत सुख (नित्यानंद) का अनुभव कर । तुझो सर्व ब्रह्म के वेदांत सार पढना आवश्यक है । इस सृष्टि के चौरासी जीवराशियों में मानव प्राणी सर्वश्रेष्ट कहलाती है । इस लिए शरीफ जी कहते है कि वह गुरुदेव को स्वीकार करके शाश्वत सुख प्राप्त करे और परमार्थ की और जाकर सदगति प्राप्त करे तो उसका जीवन सार्थक बन जाता है । यही शरीफ जी की अपेक्षा हैं ।

9.होली पद :–

शरीफ जी के काव्य में अधिक होली के पद न मिलते पर भी कुछ पदों को हम जरुर देख सकते है । ये गीत लंबी होती है । ' जैमनी भारत ' से उपलब्ध ' प्रमीला ' नामक होली पद में धर्मराज से छुडवाये गये घोडे कों प्रमीला बांधती है । इस से प्रमीला और पार्थ के बीच में जो लडाई होती है । उसका सुन्दर वर्णन युक्त होली गीत देख सकते है ।

अंत में कहा जाता है कि कन्नड के अनेक प्रसिध्द विद्वानो ने शिशुनाल शरीफ साहेब जी को कर्नाटक का ' कबीर ' कहा है । उनका कहना है कि– हिंन्दू और मुसलमान सांस्कृतिक सम्मिलन तथा कर्नाटक के साहित्यिक वैभव की मार्मिकता भी शरीफ जी के कविताओं में भरी हुई है ।

1.डॉ. शिवानंद गुब्बण्णवर ;कन्नडद्ध ' बरकों पद बरको '
2.डॉ. मल्लिकार्जुन सिंदगी ;कन्नडद्ध शरीफ के तत्वपद.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium   Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net